गोंडी

चुडोल चीवा ना साथी...

रावेन्द्र कुमार 'रवि'
कला: कनक शशि

एकलव्य

चुडोल चीवा ना साथी...

रावेन्द्र कुमार 'रवि'
कला: कनक शशि

चुडोल चीवा ना साथी...

एक चित्रकथा

नन्हे चूज़े की दोस्त... (गोंडी)

Nanhe Chuje Ki Dost (Gondi)

कहानी: रावेन्द्र कुमार 'रवि'

कला: कनक शशि

हिन्दी से गोंडी अनुवाद: उर्मिला तेकाम, नेहा वाड़िवा (शाहपुर)

संयोजन: खेमप्रकाश यादव, आकाश मालवीय, हेमराज मालवीय, निदेश सोनी, अशोक हनोते, सुनील हनोते, राजेन्द्र देशमुख ।

सम्पादकीय व उत्पादन सहयोग: इन्दु श्रीकुमार व कमलेश यादव

दूरबीन एचटी पारेख फाउंडेशन के वित्तीय सहयोग से विकसित

यह किताब हिन्दी व कोरकू भाषा में भी उपलब्ध है

संस्करण: मार्च 2024 (2000 प्रतियाँ)

कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबीबी (कवर)

ISBN: 978-81-19771-82-0

मूल्य: ₹ 22.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**

जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)

फोन: +91 755 297 7770-71-72-73

वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

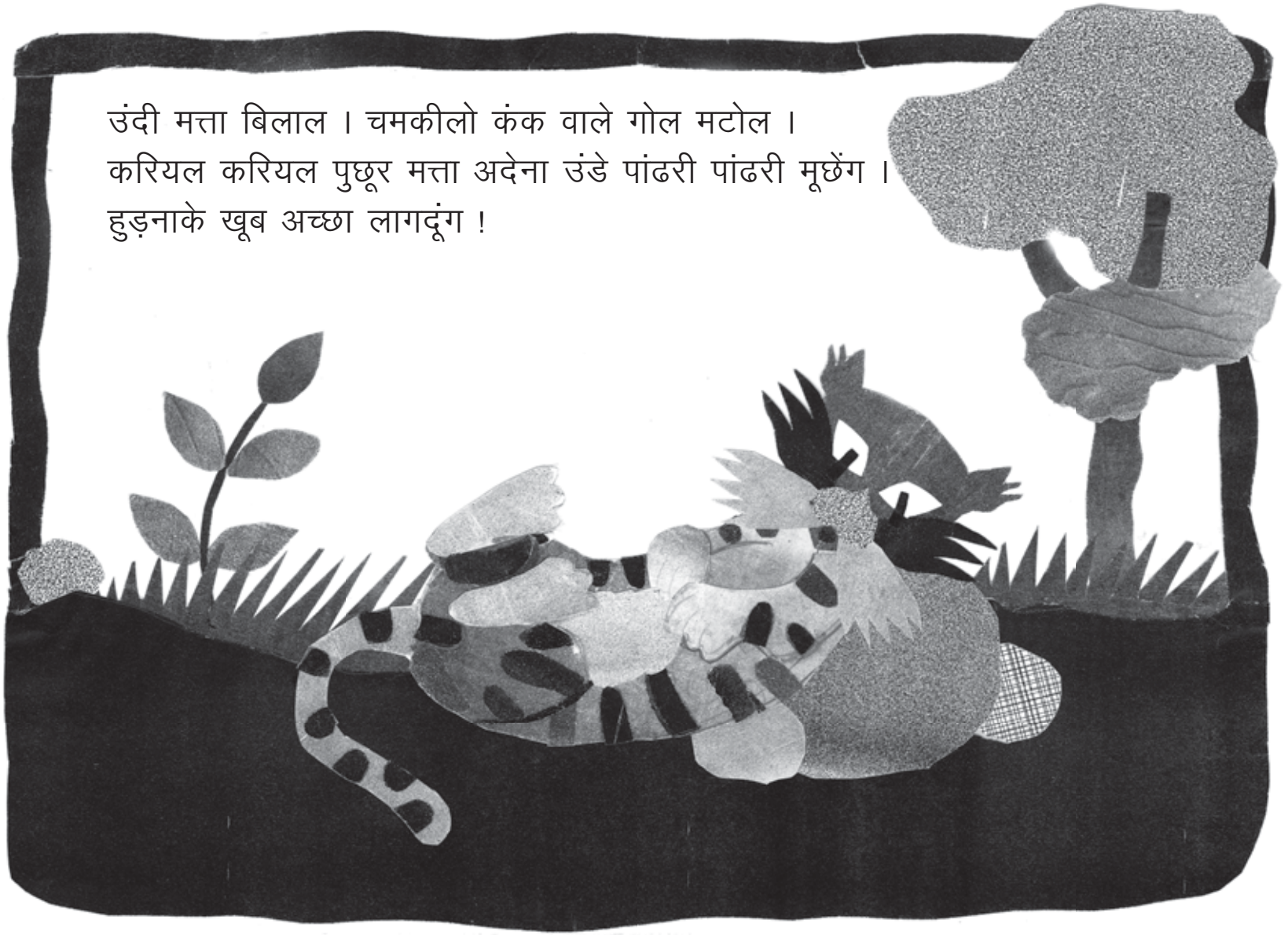
उंदी मत्ता बिलाल । चमकीलो कंक वाले गोल मटोल ।
करियल करियल पुछूर मत्ता अदेना उंडे पांढरी पांढरी मूछेंग ।
हुड़नाके खूब अच्छा लागदूंग !

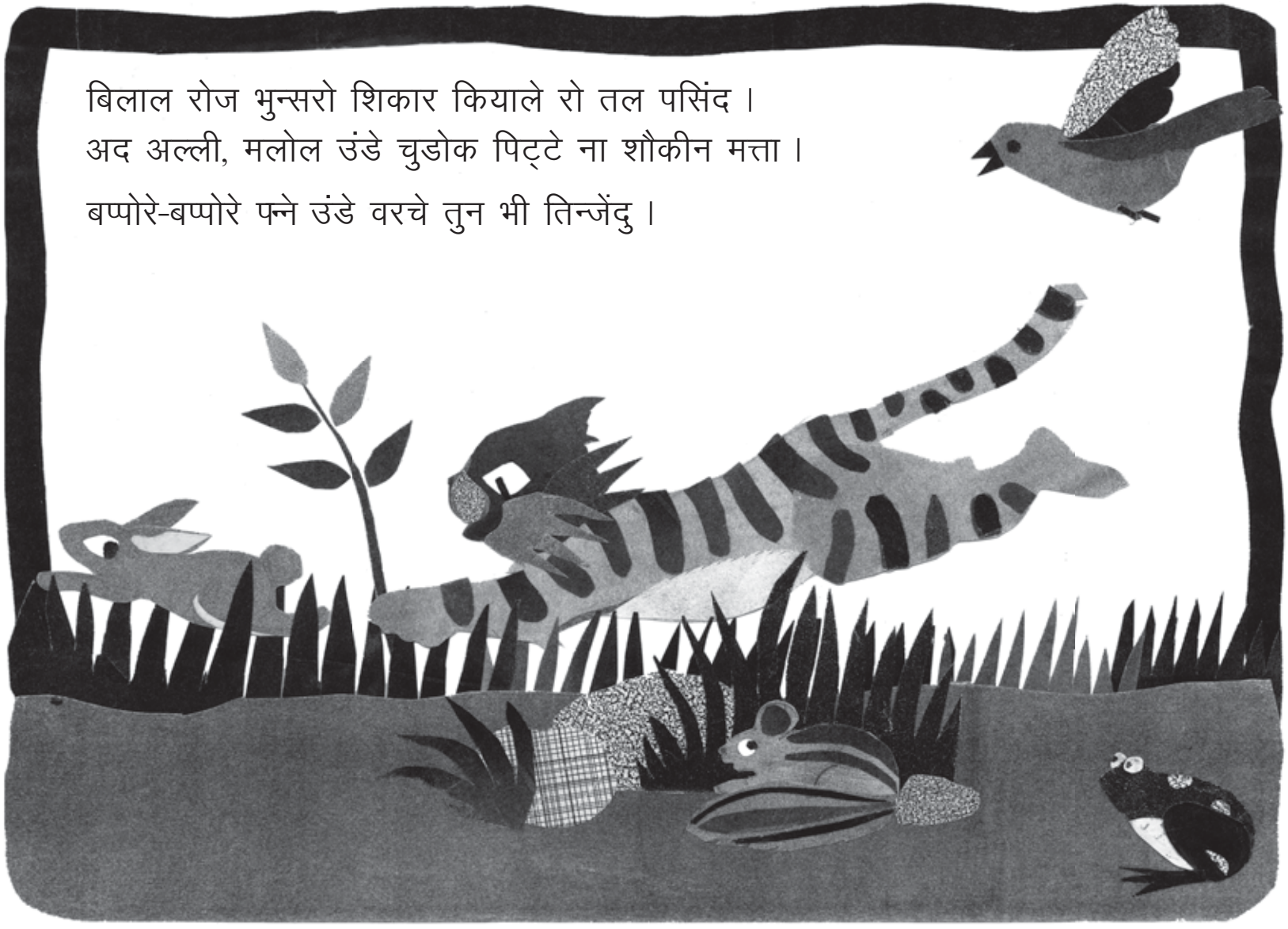
बिलाल रोज भुन्सरो शिकार कियाले रो तल पसिंद ।
अद अल्ली, मलोल उंडे चुडोक पिट्टे ना शौकीन मत्ता ।
बप्पोरे-बप्पोरे पन्ने उंडे वरचे तुन भी तिन्जेंदु ।

उंदी भुन्सरो उंदी नन्हाल-मुन्नाल, नरम पोनी ता गोलात लेका चीवाल वर्रोय गर्सदूँल ।
अद ओन बईलक काल्क दबी किसी कुन ओना हिके बढ़ेमाइलात ।

जब अद ओन करूम अवतु ते अदेन हुरसी चीवाल जरा भी अयले वरियोल ।

चीवाल पहली बार बीलान हुर्सितोल । अद ओन खूब अच्छा लागतु ।

चीवाल किलकारिंग निहित्ता लातुल । चूँ-चूँ-चूँ-चूँ किसी बीला न नालुन्गटेखाक तिरतालातूल ।

ओल बप्पोरे बीला न पुछूर बय्याना कोशिश किन्दुल ते बप्पोरे अदेना मुछेंग ।

बीलान भी ओना शरारत कियाना खूब पसंद वातु ।
अद भी म्याऊं-म्याऊं किसी कुन चीवान संग गर्सिलात ।

चीवाल उंडे बिलाल गर्स्नाके मगन मतंग । अच्छोई जेदे कौर माँ वातु ।
अद ताना छव्वा तुन बीलान संग गरसाना हुरसीकुन घबरे मासत ।

कौर समझे मान्दू की बिलाल चीवान तिन्जिदाल । घबरे मासिकुन अद आरी लात ।
बिलाल सोचेमात की कौर तुन समझी कियाना चाहिए की युहूँ बेनाई मांदी अयले
बिलाल कौर तिक्के बड़ेमात ।
चीवाल उच्केमासिकुन बीलाना ढूढ्डी ते उच्चेतुल ।
इंगा तो कौर उंडे भी वरिसेत ।

बिलाल कौरदून इत्तू, अल्ले, अल्ले, वरिमा मनी! बिलकुल भी मन वरिमा ।
अना येन अल तिन्नोंन । एल तो खूब प्यारो हईयुल । नाकुन भी येन से प्यार आस्त हई ।
चीवाल डयसिकुन माँ करूम वासेतुल। कौर ता जान ते जान वातू ।
कौर अदेन जीवा निहिचिकुन लाड़ कितु ।

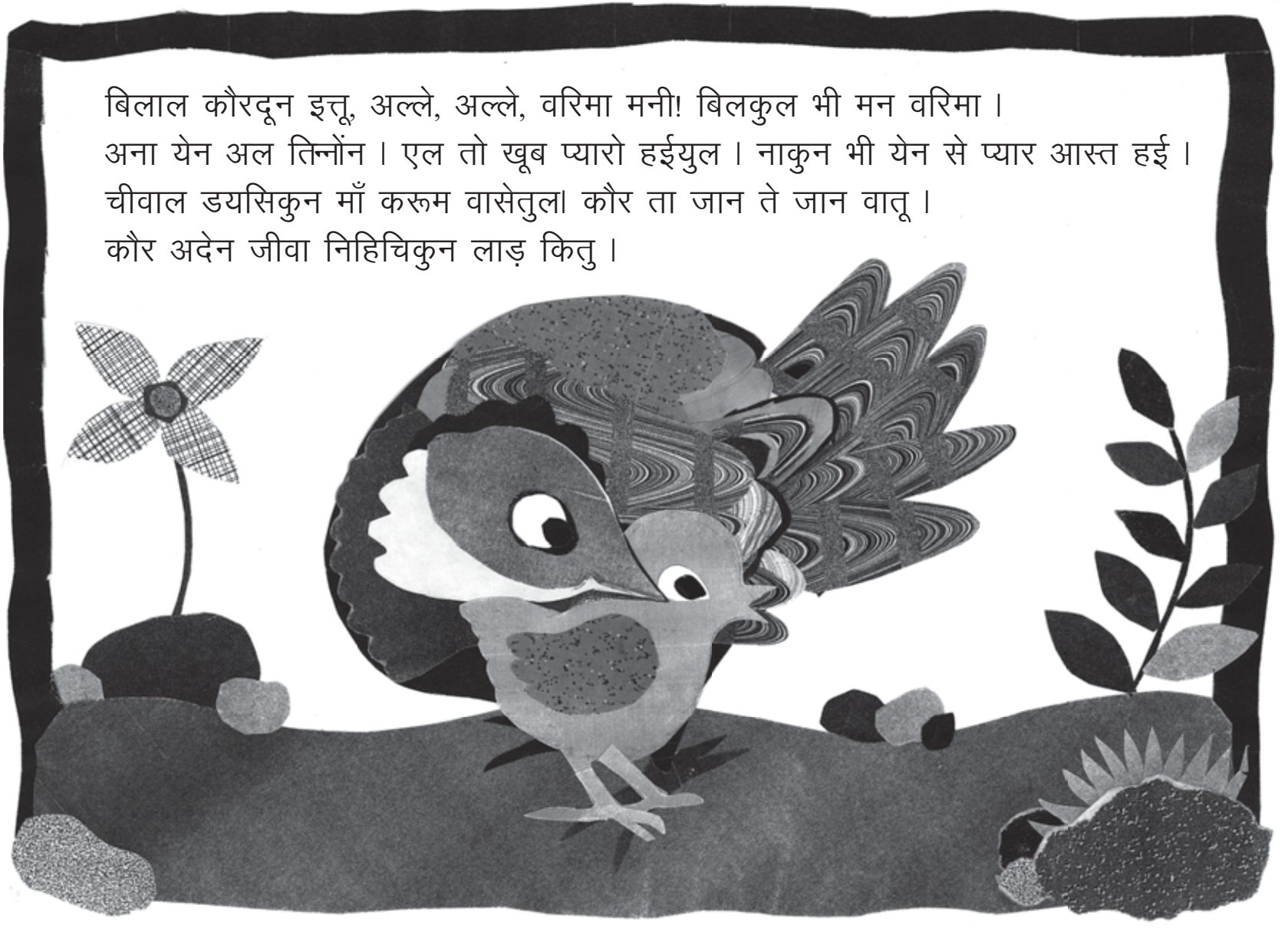

बिलाल इंगा भी अगाई मत्ता । चीवाल विच्चीकुन फिर तल बीला ना करूम हत्तुल । उंडे इत्तू, 'नेटाल इमा नावा दोस्त हई उंडे अना नीवा ।'

बीलान खूब अच्छा लागतु ।
फिर तो धीरो-धीरो सब अदेना दोस्त बने मासेतुर ।

चीवाल शिकारी बीलान दोस्त बनी किसेतुल बहून?
पढ़ेमामट इद मजेदार किताब ते।

एकलव्य

मूल्य: ₹ 22.00

दूरbeen
Read Imagine Explore
AN INITIATIVE OF H T PAREKH FOUNDATION

मध्य प्रदेश में बैतूल क्षेत्र में बोली जाने
वाली गोंडी भाषा पर आधारित